मुंशीलाल आर्य कॉलेज, कसबा, पूर्णियॉ

- डॉ मनोज कुमार सिंह

हिन्दी विभाग

मुंशीलाल आर्य महाविद्यालय, कसबा, पूर्णियॉ

हम जिसे भारतीय काव्यशास्त्र कहते हैं, वह मूलतः संस्कृत साहित्य का काव्यशास्त्र है। आज तक हम संस्कृत काव्यशास्त्र या पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सहारे हिन्दी रचनाओं का मूल्यांकन–विश्लेषण करते रहे हैं। डॉ नगेन्द्र लिखते हैं–'' कम से कम हिन्दी के पास इतना मूलधन अवश्य विद्यमान है कि इसके आधार पर एक अच्छे काव्यशास्त्र का निर्माण किया जा सकता है, जो संस्कृत तथा अंग्रेजी का उपजीवी न होकर हिन्दी की अपनी सम्पत्ति होगा।'' हिन्दी समीक्षा आज भी अन्य भाषा की समीक्षा पद्धतियों और प्रतिमानों से संचालित है। तब जबकि हिन्दी का रचना–कोश विशाल और समृद्ध है।

''वस्तुतः हिन्दी की प्राचीन और नवीन मौलिक रचनाओं में निहित सौंदर्य चेतना ही हिन्दी समीक्षा शास्त्र का वास्तविक आधार बन सकती है।''

जब हम संस्कृत की समीक्षा प्रणाली को अपनाते हैं तो शायद हिन्दी के मूल स्वरुप को भूल जाते हैं।

- 'हिन्दी के निजी आलोचना–शास्त्र की संभावना : पुनर्विचार' शीर्षक आलेख में रामचंद तिवारी ने हिन्दी की निजी आलोचना–शास्त्र की वकालत करते हुए लिखा है–'' मेरा निवेदन है कि हिन्दी एक स्वतंत्र भाषा है। वह विगत बारह सौ वर्षों से एक विस्तृत भूखंड में करोडों मनुष्यों की अभिव्यक्ति का माध्यम रही है। ————————। सर्वमान्य तथ्य है कि आलोचना के मूल आधार रचना के ही भीतर से उपलब्ध होते हैं। जब हिन्दी का अपना रचना संसार है, जब उसमें मौलिक रचनाएँ विद्यमान हैं, तो उन रचनाओं में निहित सौंदर्य का उदघाटन और विश्लेषण करनेवाली समीक्षा हिन्दी की अपनी समीक्षा क्यों नहीं है।''

''अपने उद्भव काल में ही हिन्दी साहित्य की अर्न्तधारा संस्कृत के शास्त्र–निष्ठ काव्य–दृष्टि से अलग लोक हृदय से जुडकर प्रवाहित हुई है।''

- सूरसागर का भावोल्लास अन्यतम है, पद्मावत का प्रगाढ और दिव्य प्रेम मनुष्य को देवत्व प्रदान करने वाला है, मानवीय गरिमा के बोध से मंडित कबीर का प्रखर व्यक्तित्व अनुपेक्षणीय है, मीरा की अनुभूति सघनता विरल है, घनानन्द की मर्मव्यथा व्यंजक लाक्षणिकता बेजोड है, बिहारी का उक्ति–वैचित्रय और समास शक्ति अनुपम है, कामायनी का उदात्त काव्य–वैभव विस्मय में डालने वाला है, निराला के 'तुलसी दास' में भारतीय संस्कृति के चिन्मय रुप का तुलसी की मानसिक यात्राा के माध्यम से अपूर्व उन्मेष हुआ है, 'राम की शक्ति पूजा' का महाकाव्यात्मक औदात्य, नाटकीय मनःद्वन्द्व और अनुभूति संश्लिष्ट गीतिबंध चकित कर देने वाला है

“हम एक ओर यह कहते नहीं अघाते कि तुलसी का रामचरित मानस मध्यकाल में रचित विश्व की सर्वश्रेष्ठ काव्यकृति है,

- , दिनकर की उर्वशी द्वन्द्वात्मक चेतना का श्रेष्ठ नाट्य गीत्यात्मक प्रयोग है और फैंटेसीधर्मा कवि मुक्तिबोध की रचना आधुनिक भारतीय जीवन बोध का एक दहकता इस्पाती दस्तावेज है और दूसरी ओर दयनीय भाव से स्वीकार कर लेते हैं कि हिन्दी आलोचना कुहरे का एक एसा झोना पटल है, जो संस्कृत के कूप जल की आर्द्रता और अंग्रेजी की आकाशीय उष्मा के अनैतिक संयोग से उत्पन्न हुआ है। हमें इस हीनता ग्रंथि से मुक्त होना है। अपने स्वरुप को पहचानना है।

- email : mpmahananda@gmail. com

डॉ मनोज कुमार सिंह